विचार बिन्दु

सच्चा पड़ौसी वह नहीं जो तुम्हारे साथ उसी गली में रहता है बल्कि वह है जो तुम्हारे विचार स्तर पर रहता है। –रामतीर्थ

सामाजिकता से दूर होने के नकारात्मक प्रभाव

सामाजिक ताने-बाने में बदलाव को इस तरह से आसानी से समझा जा सकता है कि सोशियोट्रॉपी आज बीते जमाने की बात होती जा रही है। कोरोना के बाद तो हालात में और भी अधिक बदलाव आया है। आज की पीढ़ी में सामाजिकता का स्थान वैयक्तिकता लेती जा रही है। एक समय था जब सामाजिकता को वैयक्तिकता के स्थान पर अधिक तरजीह दी जाती थी। परिवार, मौहल्लों और आसपास कोई ना कोई ऐसे अवश्य मिल जाते थे जो जगत मामा तो कोई जगत काका तो कोई जगत दादा होते थे। छोटा हो या बड़ा, दादी हो या पोती, सास हो या बहू सब उन्हें प्रसिद्ध नाम से ही पुकारते थे। यह था एक तरह का अपनत्व। इस तरह के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सभी के चहेते होते थे तो जान-पहचान हो या ना हो, वे जरुरत के समय पहुंच जाते थे। सुख-दु:ख खासतौर से मुसिबत के समय ऐसे व्यक्ति आगे रहते थे। हांलाकि आज इस तरह के व्यक्तित्व को ढूंढना लगभग असंभव सा ही है।

दरअसल हमारी परंपरा व्यस्टी का ना होकर समस्टी की रही है। बच्चों को पहले सामाजिकता का पाठ पढाया जाता था। बच्चे मौहल्ले के सभी घरों को अपना ही घर मानकर चलते थे तो मौहल्ले में रहने वाले किसी का भी बच्चा हो उसे अपने बच्चे जितना ही प्यार और दुलार देते थें। दु:ख-दर्द में पूरा मौहल्ला साथ हो जाता था। मौहल्ले में किसी घर में मौत हो जाती थी तो पड़ोसी उस परिवार को संभालने और देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं अपने हाथ में ले लेते थे। शादी-विवाह में काम बंट जाता था, आज तो केटरिंग का जमाना आ गया, नहीं तो सैकड़ों लोगों को परिवार और मौहल्ले के युवा ही भोजन कराने की जिम्मेदारी निभा लेते थे। हलवाई के काम शुरु करते ही मौहल्ले के लोग बारी-बारी से देखरेख व सहयोग के लिए तैयार रहते थे। आज यह सब बदल गया है। गगन चुंबी इमारतों में कई परिवार रहते हैं और हालात यहां तक हो गए हैं कि एक ही कॉम्पलेक्स या अपार्टमेंट में रहने वाले एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं। ऐसे में आपसी सहयोग और मेल मिलाप की बात करना बेमानी होगा।

सोशियोट्रापी मनोविज्ञान में प्रयोग होता है। हांलाकि इसे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही अर्थों में लिया जाता है। दूसरों को खुश रखने की खुशी में अपने खुशी को भूल जाना वाली मनोस्थिति को भी सोशियोट्रापी के रुप में देखा जाता है। यही कारण है कि इस एकांगिग अर्थ को लेने के चक्कर में सोशियोट्रोपी मानसिकता वाले लोगों के अवसादग्रस्त, तनाव पीड़ित और हमेशा चिंतित रहने की मनोदशा को साइड इफेक्ट के रुप में देखा जाता है। जबकि सोशियोट्रापी यहीं तक सीमित नहीं है। दूसरे के दु:ख-दर्द में भागीदार होना, आवश्यकता के समय निस्वार्थ सहयोग व सहायता करना, दूसरे की परेशानी को समझना और उसे दूर करने में यथासंभव सहयोग करना यह सोशियोट्रापी का ही एक रुप है। हमारी परंपरा में जो व्यक्ति केवल अपने आप के बारे में सोचता है उसे एकलखोर या स्वार्थी कहा जाता रहा है। हमारी परंपरा वसुधेव कुटुम्बकम की रही है। हमारी परंपरा में दूसरे की उन्नति देखकर प्रसन्न होने की भावना रही है। खुशी के मौके पर मिठाई बांटना खुशी में सभी को भागीदार बनाना है। इसी तरह से जरुरत के समय खड़े हो जाना जरुरतमंद के लिए संबल होता है।

पहले बच्चे मौहल्ले के सभी घरों को अपना ही घर मानकर चलते थे तो मौहल्ले में रहने वाले किसी का भी बच्चा हो उसे अपने बच्चे जितना ही प्यार और दुलार देते थें। दु:ख-दर्द में पूरा मौहल्ला साथ हो जाता था। आज यह सब बदल गया है। गगन चुंबी इमारतों में कई परिवार रहते हैं और हालात यहां तक हो गए हैं कि एक ही कॉम्पलेक्स या अपार्टमेंट में रहने वाले एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं। ऐसे में आपसी सहयोग और मेल मिलाप की बात करना बेमानी होगा।

देखा जाए तो बदलते सामाजिक ताना-बाना ने सब कुछ बदल कर रख दिया है। एकल परिवार की संस्कृति समाज में अपना प्रभुत्व जमा चुकी है। परिवार पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित होता जा रहा है। जो भावनात्मकता संबंधों को तरोताजा रखती थी वह भावनात्मकता कहीं खो गई है। अवकाश के दिनों का उपयोग दादा-दादी या नाना-नानी के पास गुजारने के स्थान पर कहीं घूमने-घामने में जाया होने लगा है। एक समय था जब गांव से यात्रा पर भी जाते थे तो गांव के कई परिवार के लोग उस भ्रमण दल में होते थे। हालात तो यहां तक होने लगे हैं कि घर के बुजुर्ग सदस्य को जिसे साथ की अधिक आवश्यकता है घर की देखभाल के लिए छोडना आज आम होता जा रहा है। खुशी के पल को साझा करने का तरीका भी बदल गया है। जिस तरह की प्राथमिकताएं बदली है वह पीपल प्लीजर के स्थान पर सेल्फ प्लेजर होती जा रही है। दरअसल सामाजिकता के जो मायने एक समय होते थे उसमें कोई क्या कहेगा महत्वपूर्ण होता था, सामाजिक प्रतिक्रिया का बड़ा भय होता था, आज हालात यह है कि मां-बाप क्या कहेंगे इसकी भी परवाह नहीं रही है। दरअसल न्यूक्लियर फैमेली के यह साइड इफेक्ट है जो लोगों को सोशियोट्रापी से दूर ले जाते हैं। हांलाकि पाश्चात्य देशों द्वारा अब इसकी अहमियत सामने आने लगी है। ब्रिटेन में पिछले दिनों एक अध्ययन में सामने आया है कि अब बच्चों का जब भी मौका मिलता है परिवार यानी कि दादा-दादी या नाना-नानी का साथ जरुरी माना जाने लगा है। क्योंकि सामाजिक ताना-बाना में बिखराव के कारण ही आज की पीढ़ी ही रिश्तों की अहमियत को भूलती जा रही है। दादा-दादी या नाना-नानी में से एक तो पराया होता जा रहा है। जब खास रिश्तों के ही यह हालात होते जा रहे हैं, परिवार के मायने ही बदलते जा रहे हैं तो फिर अडोस-पडौस, मौहल्ले या शहर-गांव के रिश्तों की बात करना ही बेमानी होगा।

इतना अवश्य है कि आज की पीढ़ी के सामाजिकता से दूर होने के नकारात्मक प्रभाव समाज के सामने आने लगे हैं। पाश्चात्य देश अब रिश्तों की अहमियत को समझने की दिशा में आगे बढने लगे हैं वही हम रिश्तों की अहमियत और सामाजिकता को खोते जा रहे हैं। यह अपने आप में गंभीर चिंता का विषय है। समाज और समाज विज्ञानियों व मनोविज्ञानियों को हालात की गंभीरता को समझते हुए समय रहते हालात को सुधारने के प्रयास करने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
वरिष्ठ लेखक)

नेताजी का प्रेरणादायक नारा 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'

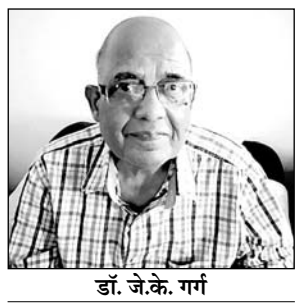

डॉ. जे.के. गर्ग

जन जन के नायक महान स्वतन्त्रता सेनानी नेता जी कहते थे कि राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम, शिवम, सुन्दरम से प्रेरित होना चाहिये । उन्होंने हमें अपने जीवन में सदेव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी थी चाहे हमारा सफर कितना ही भयानक, कष्टदायी दुखी और बदतर हो । सुभाष बोस ने हमें संदेश दिया था कि सफलता, हमेशा असफलता के स्तंभ पर खडी होती है। जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, वो आगे बढते हैं किन्तु उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं। नेताजी ने बतलाया कि मेरा अनुभव है कि हमेशा आशा की कोई न कोई किरण आती है, जो हमें जीवन से दूर भटकने नहीं देती । नेताजी बार बार बोलते थे कि अन्याय और अपराध को सहना और गलत के साथ समझौता करना है सबसे बड़े पाप हैं। भारतीयों का कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उस आजादी की रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए । एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा ये आदर्श हैं सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान। जो सिपाही हमेशा अपने देश के प्रति वफादार रहता है, जो हमेशा अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है, वो सिपाही अजेय है। अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने हृदय में समाहित कर लो ।

नेताजी अक्सर कहते थे कि सफलता हमसे दूर जरुर हो सकती है किन्तु वह दिन अधिक दूर नहीं जब हम भी सफल होंगे । याद रखिये कि जीवन में सफलता का आना अनिवार्य ही है । नेताजी के मुताबिक मां का प्यार सबसे गहरा और है स्वार्थ रहित होता है। माँ के प्यार को मापने का कोई पैमाना हो नहीं सकता है मां की ममता और प्यार को किसी भी तरह से मापा नहीं जा सकता । नेताजी ने हमको समझाया कि हमारे देश की प्रमुख समस्याएं गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण सिर्फ समाजवादी तरीके से ही की जा सकती है ।

आजाद हिन्द फौज के प्रणेता क्रांतिकारी जन नायक सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक के निवासी जानकीनाथ बोस प्रभावती के यहाँ हुआ था । सुभाष 14 लड़के लड़कियों में से नौवीं संतान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कटक में रेवेनशा कॉलेजिएट स्कूल में हुई । उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से 1919 में बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की थी इस परीक्षा में उन्हें यूनिवर्सिटी में उन्हें दूसरा स्थान मिला था । 1920 की आईसीएस परीक्षा में उन्होंने चौथे स्थान मिला। सुभाष का मन अंग्रेजों के अधीन काम करने का नहीं था इसलिए उन्होंने से एक साल के भीतर 22 अप्रैल 1921 को त्यागपत्र दे दिया क्योंकि उनके दिल अंग्रेजों की गुलामी और भारत माता का आजाद करने का जुनून था । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वप्रथम बंबई गये और गांधीजी से मिले। वहाँ 20 जुलाई 1921 को गांधी जी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। नेहरूजी के साथ सुभाष ने कांठोस के अंतर्गत युवाओं की इण्डिपेंडेंस लीग शुरू की। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष बनाये गये सुभाष बाबू को इस आयोग का सदस्य बनाया गया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब इस अधिवेशन के अन्दर तय किया गया कि भारत में 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास का दण्ड मिला। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 में छह महीने के लिये कृष्ण मन्दिर जाना पड़ा । 1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। वे जब कलकत्ता महापालिका के प्रमुख अधिकारी बने तो उन्होंने कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम हटाकर भारतीय नाम पर कर दिया। 1934 ई. में सुभाष अपना इलाज कराने के लिए ऑस्ट्रिया गए थे । उस समय उन्हें अपनी पुस्तक टाइप करने के लिए एक टाइपिस्ट की जरूरत थी। उन्हें एमिली शेंकल नाम की एक टाइपिस्ट महिला मिली। उन्होंने उससे सन् 1942 में बाढ़ गस्टिन नामक स्थान पर हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार एमिली शेंकल से विवाह किया। एमिली शेंकल से उनको पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम अनीता रक्खा । सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी। 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुना गया । इस अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। 3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लाक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। कुछ दिन बाद सुभाष को कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बंगाल की भयंकर बाढ में घिरे लोगों को उन्होंने भोजन, वस्त्र और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का साहसपूर्ण काम किया था । समाज सेवा का काम नियमित रूप से चलता रहे इसके लिए उन्होंने युवक-दल की स्थापना की ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन किया था उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। उन्होंने भारतवासियों को "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा" का नारा दिया था जो आज भी हमारे मन मस्तिष्क में गूंज रहा है।

21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्छेको और आयरलैंड समेत 11 देशों ने मान्यता दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं । इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रिपता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेताजी कहा, तभी से उन्हें नेताजी कहा जाने लगा। नेताजी ने कहा था कि हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। सुभाष बाबू ने कहा था याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है। नेताजी कहा करते थे कि एक सैनिक के रूप में उनको आपको हमेशा सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान जेसे तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा ।

23 अगस्त 1945 को टोक्यो रेडियो ने बताया कि सैगोन में नेताजी एक बडे बमवर्षक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदाई, पायलट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहाँ उन्होंने अंतिम श्वास ली और नेताजी पंच महाभूतों में विलीन हो गये। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थियाँ संचित करके जापान की राजधानी टोक्यो के रेगोंजी मंदिर में रख दी गयी भारतीय महालेखाकार से प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि ग्यारह बजे हुई थी।

आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करने के नेताजी का प्रयास हालांकि प्रत्यक्ष रूप में सफल नहीं हो सका था किन्तु उनका दूरगामी परिणाम हुआ। सन् 1946 के नौसेना का विद्रोह इसका जीता जागता प्रमाण है। नौसेना विद्रोह के बाद ही ब्रिटेन को विश्वास हो गया कि अब भारतीय सेना के बल पर भारत में शासन नहीं किया जा सकता और भारत को स्वतंत्र करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा। आजाद हिन्द फौज को छोड़कर विश्व-इतिहास में ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं मिलता जहाँ तीस-पैंतीस हजार युद्धबंदियों ने संगठित होकर अपने देश की आजादी के लिए ऐसा प्रबल संघर्ष छेड़ा हो। सुभाष चंद्र बोस के उनके संघर्षों और देश सेवा के जज्बे के कारण ही महात्मा गांधी ने उन्हें देशभक्तों का देशभक्त कहा था । नेताजी मानते थे कि जिस व्यक्ति के अंदर सनक नहीं होती वो कभी महान नहीं बन सकता । लेकिन उसके अंदर, इसके अलावा भी कुछ और होना चाहिए ।

आजाद हिंद सरकार के 75 साल पूर्ण होने पर साल 2018 मे पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त के अलावा लाल किले पर तिरंगा फहराया। प्राप्त सूचनाओं के मुताबिक नेताजी के 125 वें जन्मदिवस के उपलक्ष में भारत सरकार 2022 के गणतंत्र दिवस समारोह का शुभारंभ 24 जनवरी के बजाय 23 जनवरी से करने की योजना बना रही है। जन जन के दुलारे नेताजी का जन्मदिन देश में पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। जन जन के दुलारे नेताजी के 23 जनवरी 2025 को राष्ट्र उनके 128वें जन्म दिन पर उनके श्री चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता है ।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज
शिक्षा जयपुर

तालाब में मलबा डालकर भराव क्षेत्र नष्ट का आरोप

मसूदा। मसूदा उपखंड अधिकारी को एडवोकेट पवन कुमार जीनगर ने एक लिखित शिकायत दी गई जिसमें उन्होंने बताया कि गत कुछ महीनों से ब्यावर से गौयला मेगा हाईवे का निर्माण किया जा रहा है उक्त मेगा हाईवे नगर पालिका क्षेत्र मसूदा से होकर निकल रहा है।

उपरोक्त मेगा हाईवे का निर्माण करने हेतु श्री बालाजी कंस्ट्रक्शन कंपनी को टैडर दिया गया है । पिछले कुछ समय पूर्व उपरोक्त कंपनी के ठेकेदार द्वारा नगर पालिका क्षेत्र मसूदा में स्थित सीमेंट की सड़क को तोड़ा गया था तथा सड़क को तोड़ने के बाद अत्यधिक मात्रा में सीमेंट का मलबा निकाला था ।

ठेकेदार द्वारा सीमेंट के मलबे और मिट्टी को सड़क से हटाकर नियोजित स्थान पर उसे डालना था परंतु ठेकेदार द्वारा बदनीयती पूर्वक और विधि विरुद्ध तरीके से कार्य करते हुए सड़क तोड़ने के बाद निकले हुए मलबे को मसूदा स्थित गोविंद सागर तालाब में डाल दिया गया ठेकेदार द्वारा सैकड़ों की तादाद में ट्रक में भरकर वह मलबा और मिट्टी गोविंद सागर तालाब में डाल दिया गया । गोविंद सागर तालाब मसूदा कस्बे का मुख्य तालाब है तथा इसके भरे जाने के पश्चात मसूदा कस्बे में भूजल स्तर पर्याप्त मात्रा में हो जाता है जिस कारण हजारों बीघा जमीन पर सिंचाई की जाती है परंतु ठेकेदार द्वारा जानबूझकर गोपाल सागर तालाब में अत्यधिक मात्रा में मलबा डाला गया जिससे भराव क्षेत्र में कमी आई है और सीमेंट का मलबा डालने के कारण पानी प्रदूषित हुआ है।

अजमेर को बाल विवाह मुक्त बनाने का किया वादा

अजमेर (कासं)। बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण के इको सिस्टम को मजबूती देने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए भारत सरकार के नीति आयोग और एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन (एवीए) ने देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और सशक्तीकरण तथा अगले एक साल में देश के 104 प्रखंडों के 15,000 गांवों को बाल विवाह मुक्त घोषित करने के लिए हाथ मिलाया है।

इस आशय के मंतव्य पत्र (एसओआई) पर नई दिल्ली में दस्तखत किए गए। नीति आयोग और एवीए की इस साझेदारी का स्वागत और समर्थन करते हुए राजस्थान महिला कल्याण मण्डल के निदेशक राकेश कुमार कौशिक ने कहा कि इस कदम से उनकी कोशिशों को एक नई उर्जा और गति मिली है और वे अजमेर को बाल मजदूरी, बाल विवाह, बच्चों की ट्रैफिकिंग और बाल यौन शोषण जैसे बच्चों के खिलाफ सभी तरह के अपराधों से मुक्त कराने के प्रयासों में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। एवीए और आर.एम.के.एम. दोनों ही बाल अधिकारों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए देश के 416 जिलों में काम कर रहे 250 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों के नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के सहयोगी हैं।

इस पहल के साथ एकजुटता जताते हुए आर.एम.के.एम. के निदेशक राकेश कुमार कौशिक ने कहा, 'हम भारत सरकार के 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान पर अमल करते हुए अपने जिले को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिये सतत और अनथक प्रयास कर रहे हैं।

इस साझेदारी के तहत देश के सबसे अविकसित व संवेदनशील इलाकों में बच्चियों के सशक्तीकरण और शिक्षा की पारिस्थितिकी को मजबूत करने के लिए एक समग्र और व्यापक रणनीति पर अमल किया जाएगा। बाल विवाह और बच्चों की ट्रैफिकिंग की निगरानी और रोकथाम के लिए सभी लक्षित गांवों में पंचायत स्तर पर लोगों की आवाजाही और विवाहों के ब्योरे दर्ज करने के लिए रजिस्टर रखे जाएंगे। स्कूल नहीं जा पाने वाले बच्चों को शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों से जोड़ा जाएगा, जबकि हाशिये के व्यक्तियों और परिवारों को सरकारी जनकल्याण योजनाओं से जोड़ा जाएगा।

इस अवसर पर एसोसिएशन फॉर वॉलंटरी एक्शन के कार्यकारी निदेशक धनंजय टिंगल ने कहा, 'आज समाज के सबसे कमजोर वर्गों के सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए हम गर्व और कृतज्ञता महसूस कर रहे हैं। साझा प्रयासों से हमारा लक्ष्य 2025 के अंत तक इन प्रखंडों को बाल विवाह मुक्त बनाना और दूसरों के लिए एक मिसाल कायम करना है।

उपनिदेशक नानूलाल प्रजापति ने कहा कि नीति आयोग जिला, ब्लॉक और गांव स्तर पर राज्य सरकारों, केंद्रीय मंत्रालयों और अन्य प्रमुख हितधारकों के साथ सहयोग करेगा, जबकि एवीए संवेदनशील परिवारों की पहचान करने, समय पर हस्तक्षेप के लिए जिला प्रशासन, राज्य सरकारों और केंद्रीय मंत्रालयों के साथ सहयोग से वास्तविक समय में कठिनाई का सामना कर रहे प्रत्येक बच्चे और परिवार को राहत की दिशा में प्रगति पर नजर रखने के लिए मजबूत डेटाबेस तैयार करने, चयनित जिलोंध्ब्लॉकों में बाल मजदूरी, बच्चों की ट्रैफिकिंग और बाल विवाह सहित बच्चों की शिक्षा और संरक्षण से जुड़े प्रमुख संकेतकों पर जिला प्रशासन के साथ मिलकर काम करेगा।

भारत सरकार के नीति आयोग और एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन (एवीए) ने देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा आदि के लिए हाथ मिलाया है।

राशिफल गुरूवार 23 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र शुक्रवार प्रात: 5:08 तक, गंड योग शुक्रवार प्रात: 5:06 तक, गर करण सायं 5:38 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:33 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:19 से 12:39 तक, लाभ-अमृत 12:39 से 3:18 तक, शुभ 3:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:57

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज मन:स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मॉडर्न जमाने में बैलगाड़ी से बारात

भीलवाड़ा । जिले के रायपुर से 15 किमी दूर गांव कोशीथल में एक अनोखी बारात देखने को मिली।

जहां एक सजी-धजी बैलगाड़ी में सवार होकर एक दुल्हा अपनी जीवनसंगिनी के घर रायपुर के सूरजपुरा गांव में सहकारी समिति रायपुर के उपाध्यक्ष मांगी लाल जाट के घर बारात लेकर पहुंचा।

- **सजी-धजी बैलगाड़ी में सवार होकर जीवनसंगिनी के घर पहुंचा दुल्हा**
- **बेलों को भी खूबसूरत तैयार किया**

पारंपरिक रीति रिवाज को कायम रखते हुए दुल्हा बैलगाड़ी से बारात लेकर पहुंचा है। भलेई जमाना मॉडन हो गया हो। लोग महंगी-महंगी कार, घोड़ा-बग्गी से बारात में पहुंचते है। लेकिन जाट समाज के रीति रिवाज पारंपरिक प्रथा आज भी ग्रामीण क्षेत्र में जीवित है। इसी प्रथा को जिंदा रखते हुए जाट समाज द्वारा बैलगाड़ी को सजा कर बारात निकाली है। मॉडन जमाने में भी परंपरा कायम है।

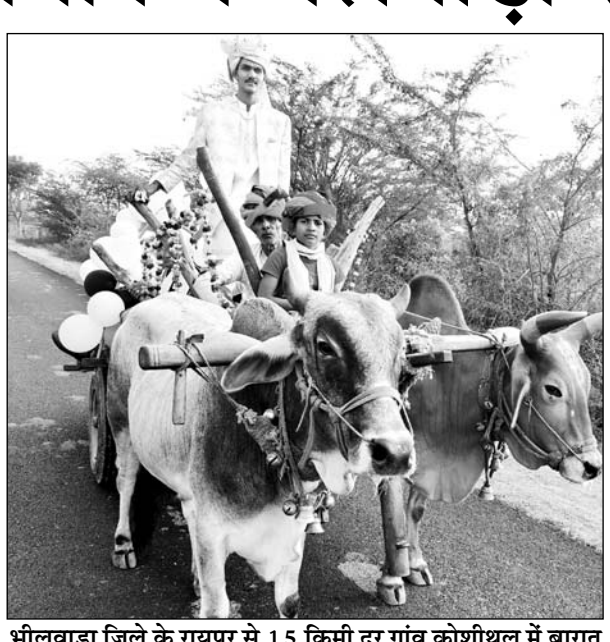

भीलवाड़ा जिले के रायपुर से 15 किमी दूर गांव कोशीथल में बारात बैलगाड़ी से निकाली ।

बैलगाड़ी से बारात आने की जानकारी लगने पर आसपास के गांव के लोग, बारात को देखने गांव पहुंचे थे। जिस प्रकार से दुल्हा-दुल्हन की कार को सजाया जाता है, उसी प्रकार से बैलगाड़ी को भी सजाया गया।

बेलों को भी खूबसूरत तैयार किया गया है। जिसमें संवार होकर दूल्हा जीवन संगिनी के घर पर पहुंचा। बारात में जाट समाज ने अपनी परंपरा अनुसार जमकर झूमे और नाचे।

दूल्हा के पिता मांगी लाल जाट ने बताया कि बेटे मोनू स्वयं की इच्छा थी कि जब भी उसकी शादी होगी, वह आजकल के दिखावों से परे अपनी बारात पुरानी रीति रिवाज की तरह सजी सवंरी बैलगाड़ी से निकालेगा। जिसके अनुरूप यह सारी व्यवस्था कर पुरानी परम्परा से बारात लेकर आए हैं।

गुजरात निवासी गिरीश भाई का अजमेर में निधन

अजमेर, 22 जनवरी (कासं)। श्री जिनदत्तसूरि मंडल दादाबाड़ी द्वारा संचालित वृद्धाश्रम में निवास कर रहे मूलत: गुजरात निवासी गिरीश भाई का 84 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया ।

श्री जिनदत्तसूरि मंडल अध्यक्ष नरेन्द्र लूणिया, जयदीप पारख, प्रो. महेन्द्र लूणिया, जसवन्त मेहता, संजय भड़गतिया, अनिल कुमार गोलेच्छा, विक्रम पारख, रवि पारख, धर्मेन्द्र जैन, संजय कुमार जैन सहित मंडल व संघ के पदाधिकारियों ने पुष्कर रोड़ स्थित श्मशान घाट पर उन्हें अग्नि को समर्पित किया। गिरीश भाई दादाबाड़ी वृद्धाश्रम में पिछले 32-33 वर्षो से निवास करते हुये साधु-साध्वियों व मंडल की सेवा में अग्रणी रहते थे। दादाबाड़ी में विराजित शतावधानी साध्वी मनोहर श्रीजी महारासा ठाणा-6 जिनदत्तसूरि मंडल और खरतरगच्छ संघ ने गिरीश भाई के निधन पर शोक प्रकट करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की।